राष्ट्रीय एकीकरण और पंथनिरपेक्षता

पा.सं.	अध्याय शीर्षक	कौशल	क्रियाकलाप
24	राष्ट्रीय एकीकरण और पंथनिरपेक्षता	आत्म बोध, अंतर वैयक्तिक सम्बन्ध	राष्ट्रीय एकीकरण और पंथ निरपेक्षता को समझना

अर्थ

भारत अत्यधिक विविधताओं वाला देश है। विभिन्न नस्लों, समुदायों और जातियों के लोग, जो भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रहते हैं, अलग-अलग भाषा बोलते हैं, भिन्न-भिन्न आस्था व धर्म में विश्वास रखते हैं लेकिन इसके बावजूद वे अपनी भारतीय पहचान में विश्वास रखते हैं तथा इसे सर्वोच्च मानते हैं। इसलिये भारत जैसे विशाल तथा विविधता वाले देश में हमें शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से रहना है और यह तभी संभव है जब हम भारतीय एक दूसरे की संस्कृति, भाषा और धर्म का सम्मान करें तथा आपस में एकजुट रहें इसे राष्ट्रीय एकीकरण कहते हैं।

राष्ट्रीय एकीकरण और भारतीय संविधान

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत को विभाजन, साम्प्रदायिक हिंसा, देशी रजवाड़ों के एकीकरण जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा।

इसलिये, भारत का संविधान राष्ट्रीय एकीकरण, सम्प्रभुता की रक्षा तथा देश की एकता ओर अखंडता पर विशेष जोर देता है। यही कारण है कि संविधान ने संघीय व्यवस्था के साथ-साथ एक शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना की है।

राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग में चुनौतियां

1. साम्प्रदायिकता

- अपने पंथ/धर्म के प्रति अत्यधिक लगाव तथा दूसरों के प्रति घृणा।
- देश की एकता और अखंडता के लिये खतरा, साम्प्रदायिक दंगों के लिये उत्तरदायी

2. भाषावाद

- राजभाषा के रूप में हिन्दी का विरोध
- गैर हिन्दी भाषी लोगों द्वारा विरोध
- अनिश्चित काल के लिये अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकृति

3. उग्रवाद व अतिवाद

- माओवादी और नक्सलवादी गतिविधियां
- ये प्राय: हिंसा और भय पैदा करते हैं तथा जानमाल की भारी क्षति करते हैं।
- इन गतिविधियों में ज्यादातर भ्रमित और भटके युवा भाग लेते हैं।

4. क्षेत्रवाद

- राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा क्षेत्रीय हितों को महत्व देना, क्षेत्रीय मांगों को बढ़ावा देता है।
- क्षेत्र विशेष में विकास के प्रति लापरवाही तथा असंतुलन को प्रदर्शित करता है
- सरकार पर क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने के लिये दबाव बनाता है।

राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने वाले कारक

(क) संवैधानिक प्रावधान

- भारत के संविधान में अनेक ऐसे प्रावधान हैं जो राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देते हैं।
- मौलिक अधिकार नागरिकों को सशक्त करते हैं जबकि मौलिक कर्त्तव्य साथ-साथ रहने के लिये सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार करते हैं।
- राज्य के नीति निदेशक सिद्धान्त सरकार को समतापूर्ण आर्थिक विकास, सामाजिक भेदभाव दूर करने तथा शान्ति और सुरक्षा के लिये प्रयास करने के निर्देश देते हैं।

(ख) सरकार के प्रयास

- राष्ट्रीय एकीकरण परिषद का गठन किया गया है।
- योजना आयोग पूरे देश के समान विकास के लिये योजनायें बनाता है।
- निर्वाचन आयोग स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव कराता है।

(ग) राष्ट्रीय त्यौहार और प्रतीक

- ये एकता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयन्ती जैसे राष्ट्रीय त्यौहार चाहे किसी भी भाषा, धर्म व संस्कृति के हों, सब मनाते हैं।
- हमारे राष्ट्रीय प्रतीक जैसे राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्र चिन्ह आदि भी हमें एकता के सूत्र में बाँधते हैं।

(घ) अखिल भारतीय सेवायें तथा अन्य कारक

- अखिल भारतीय सेवायें जैसे भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, व भारतीय वन सेवा आदि की नियुक्ति व प्रशिक्षण केन्द्रीय स्तर पर होता है और राज्यों में उच्च पदों पर आसीन होकर ये अधिकारी देश में प्रशासनिक एकरूपता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- एकीकृत न्यायिक प्रणाली, रेडियो, टेलीविजन, डाक व संचार नेटवर्क आदि भी राष्ट्रीय एकता और एकीकरण को बढ़ावा देते हैं।

पंथनिरपेक्षता

पंथनिरपेक्षता से अभिप्राय है धार्मिक आधार पर समानता तथा धार्मिक सहनशीलता। इसका मतलब धर्मविहीन या धर्म विरोधी होना नहीं है। पंथ निरपेक्षता भारत के लोकतंत्र के आधार स्तभों में से एक है।

भारत के संविधान में पंथनिरपेक्षता

भारत के संविधान में अनेक ऐसे प्रावधान है जो सुनिश्चित करते हैं कि भारत एक पंथ निरपेक्ष राज्य के रूप में स्थापित हो। वे हैं-

- संविधान की प्रस्तावना भारत को एक पंथनिरपेक्ष राज्य घोषित करती है।
- मौलिक अधिकार और राज्य के नीति निदेशक सिद्धान्त
- समानता और भेदभाव रहित, सामाजिक व आर्थिक मूलक लोकतंत्र

पंथनिरपेक्षता का महत्व

भारत वह भूमि है जिसने दुनिया के चार महान धर्मों को जन्म दिया है। अनेक संवैधानिक प्रावधानों एवं सुरक्षा उपायों के बावजूद भारत में हम साम्प्रदायिक तनाव और हिंसा का अनुभव करते हैं। इन परिस्थितियों में पंथनिरपेक्षता आवश्यक हो जाती है। यह साम्प्रदायिक सौहार्द और शान्ति के लिये ही नहीं बल्कि एक राष्ट्र के रूप में भारत के अस्तित्व के लिये भी आवश्यक है।

स्वयं का मूल्यांकन कीजिए

प्र. भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन ने राष्ट्रीय एकीकरण का वातावरण किस प्रकार पैदा किया?

प्र. साम्प्रदायिकता को राष्ट्रीय एकीकरण के लिये एक बड़ा खतरा क्यों माना जाता है? देश में शान्ति और सौहार्द की स्थापना के लिये कुछ तरीके सुझाइये।

प्र. राष्ट्रीय एकीकरण को वास्तविक रूप से बढ़ावा देने वाले कारकों का मूल्यांकन कीजिए।